मनोज
चित्र
कथा
मूल्य 6.00
आयरनमैन और
राम-रहीम
डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½
VAASU'S UPLOAD

आयरन मैन और राम-रहीम

(डबल सीक्रेट एजेण्ट ००½ राम-रहीम)

लेखक:- बिमल चटर्जी
चित्रांकन:- त्रिशूल कॉमिको आर्ट

प्यारे बच्चो! आप मनोज चित्रकथा के पिछले अंक "लोहे का शैतान" में पढ़ चुके हैं कि भारत के एक महान् वैज्ञानिक प्रोफेसर भार्गव ने एक ऐसा लौह-मानव तैयार किया जो बहुत ही बुद्धिमान इंसान की तरह बोल, सुन और सोच सकता था। उसमें सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वह उड़ भी सकता था तथा उस पर गोलियों आदि का कोई प्रभाव नहीं होता था। प्रोफेसर भार्गव ने उसका मस्तिष्क अपने कन्ट्रोल में कर रखा था, लेकिन अपराध जगत के बेताज बादशाह ड्रेगन ने न केवल उस लौह-मानव आयरन मैन को उड़ा लिया, बल्कि प्रोफेसर भार्गव व उनकी बेटी कामनी को भी अपने अड्डे में कैद कर लिया। वहीं ड्रेगन ने प्रोफेसर भार्गव को डरा-धमकाकर आयरनमैन का मस्तिष्क अपने कन्ट्रोल में करवा लिया और जब ड्रेगन के कहने पर प्रोफेसर ने आयरनमैन को जीवित किया—

नमस्कार ऐ मेरे महान् स्वामी ड्रेगन! आपका यह तुच्छ सेवक आपकी सेवा में हाजिर है।

आहा! इसने तो वास्तव में मुझे पहचान लिया है। यानी प्रोफेसर ने अपना काम बखूबी निभाया है!

गजब!

आगे क्या होता है? यह प्रस्तुत चित्रकथा में पढ़िये।

आश्चर्य न करें स्वामी और आदेश दें। आपका यह गुलाम आपके एक इशारे पर पूरी दुनिया को आपके कदमों पर झुका सकता है।

तुम्हारी ताकत पर मुझे विश्वास है आयरनमैन, लेकिन कोई भी आदेश देने से पहले मैं तुम्हें उड़ते हुए देखना चाहता हूं।

रोबोट ने तुरन्त अपने सीने पर लगे एक बटन को दबाया और –

वाह! विश्वास हो गया! अब नीचे उतर आओ आयरनमैन!
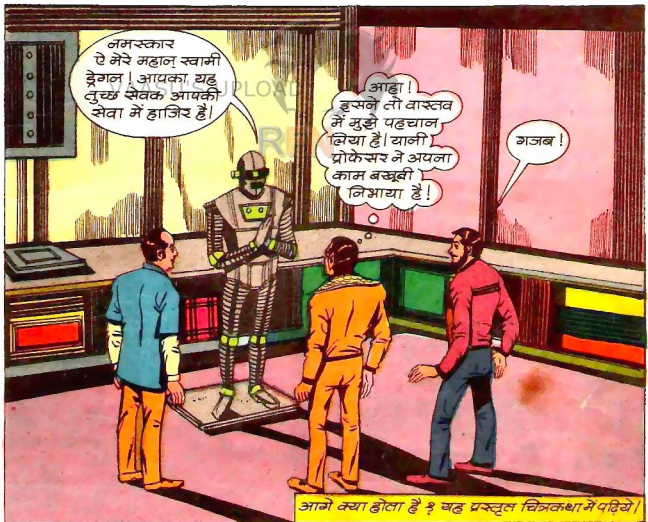
जौहरी बाजार शहर का सबसे व्यस्त इलाका था। वहां बड़े-बड़े जौहरियों की दुकानें थीं और हर समय वहां चहल-पहल रहती थी।
अचानक एक व्यक्ति की दृष्टि आकाश की ओर उठी।
अरे! वह देखो!
ओह! वह तो किसी दूसरे ग्रह का मानव जान पड़ता है!
वह आयरनमैन ही था। शीघ्र ही वह नीचे उतरा और-
अरे देखो, वह शायद कार को उठाने की कोशिश कर रहा है!

अरे बाप रे, उसने तो कार को किसी खिलौने की तरह उठा लिया है और हमारे ऊपर ही फेंकने की तैयारी कर रहा है। भागो!

वास्तव में आयरनमैन ने उस कार को भीड़ की ओर उछाल दिया।
भागो-भागो!

कई व्यक्ति कार के नीचे दब गये।
आ... ई... ई...
उफ!
आह!
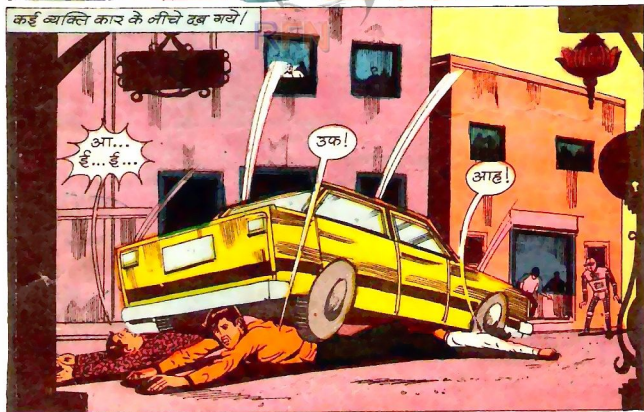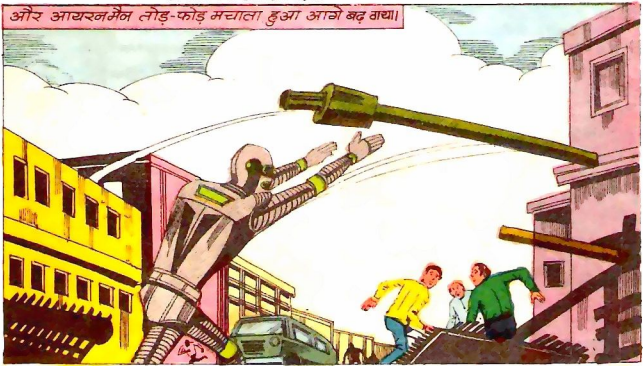
और आयरनमैन तोड़-फोड़ मचाता हुआ आगे बढ़ गया।
देखते-ही-देखते पूरा बाजार जन-शून्य हो गया। दुकानदार भी अपनी दुकानें खुली ही छोड़कर भाग खड़े हुए थे। आयरनमैनने दुकानों को लूटना आरम्भ कर दिया।
लेकिन पूरे बाजार को लूटकर आयरनमैन जैसे ही वापस लौटने को हुआ-
सर, वह रहा लोहे का शैतान!

जल्दी से उसे चारों ओर से घेरकर नष्ट कर दो।
राईट सर!
शीघ्र ही सिपाहियों ने आयरनमैन को घेर कर उस पर आक्रमण कर दिया।
धांय-धांय
रेट-रेट-रेट-
लेकिन उस भयानक फायरिंग का आयरनमैन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
बहुत हो चुका, अब जरा इन्हें थोड़ा-सा मजा चखा ही दूं।
और फिर-
कड़ाक्
उफ!
अरे बापरे!

शीघ्र ही सिपाहियों के छक्के छूट गये।
जवानो, दूर हट जाओ। इससे बन्दूकों से पार पाना मुश्किल है।
हा:... हा... हा... इतना ही सबक तुम लोगों के लिए काफी है। अब मैं जा रहा हूं। बाकी हिसाब-किताब अगले टकराव में होगा।
और -
उफ! निकल भागा शैतान!
धांय-धांय
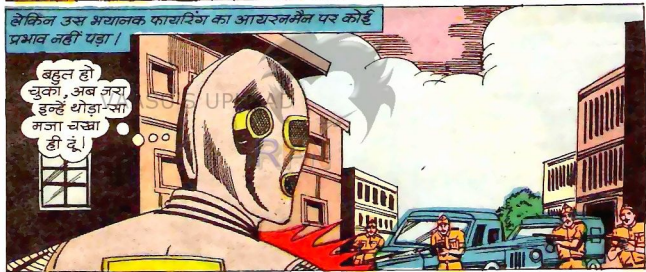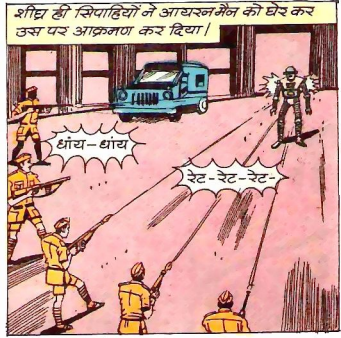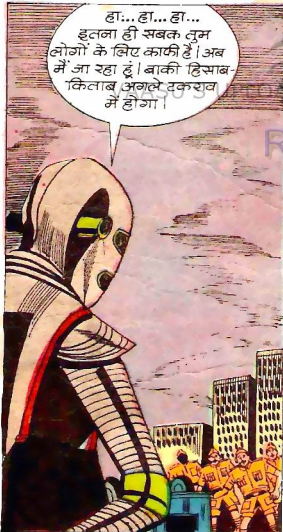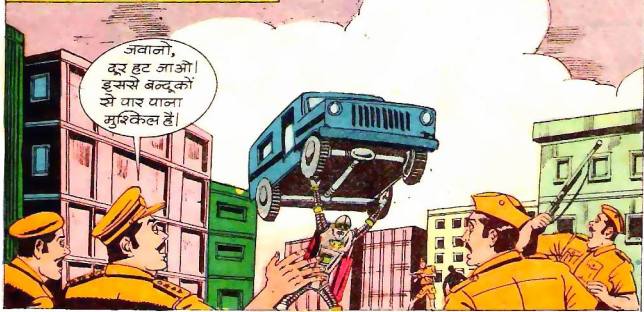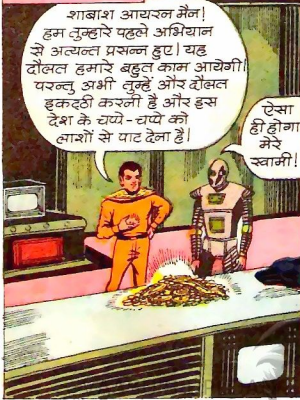
कुछ देर बाद रोबोट ड्रेगन के काले पर्वत स्थित अड्डे पर था।
शाबाश आयरन मैन! हम तुम्हारे पहले अभियान से अत्यन्त प्रसन्न हुए। यह दौलत हमारे बहुत काम आयेगी। परन्तु अभी तुम्हें और दौलत इकट्ठी करनी है और इस देश के चप्पे-चप्पे को लाशों से पाट देना है।
ऐसा ही होगा मेरे स्वामी!
और आयरन मैन प्रतिदिन लूट-मार करने लगा। पुलिस पूरी कोशिश करने के बावजूद भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकी!
हा... हा... हा... मेरे लौह-मानव से पार पाना किसी के बस का नहीं!
पूरे शहर में आतंक का वातावरण छा गया। आयरन मैन द्वारा मचाई जानेवाली लूट-मार और तबाही से जहां पुलिस परेशान थी, वहीं देश के उच्चाधिकारियों की चिन्ता भी दिन-प्रतिदिन बढ़ती चली जा रही थी।
एक दिन मजबूर हो गृह-मंत्रालय ने इस केस की फाइल सीक्रेट सर्विस के चीफ मि. मुखर्जी के हवाले कर दी।
मि. मुखर्जी, हम चाहते हैं कि उस लोहे के शैतान को जल्द से जल्द नष्ट कर दिया जाए। साथ ही प्रोफेसर भार्गव का भी पता लगाया जाए।
आप निश्चिंत रहें श्रीमान! मैं अपनी ओर से हर मुमकिन कोशिश करूंगा।
आयरन मैन के केस की फाइल लेने के पश्चात् चीफ मुखर्जी ने तुरन्त राम-रहीम को हैडक्वार्टर में बुलाया और उन्हें सारे केस के बारे में बताने के बाद अन्त में बोले-
मुझे ऐसा संदेह है कि प्रोफेसर भार्गव ही दौलत इकट्ठी करने के लिए अपने ईजाद किये रोबोट का गलत इस्तेमाल कर रहे हैं। अब हकीकत क्या है, इसका न केवल तुम्हें पता ही लगाना है, बल्कि लौह-मानव का रहस्य जानकर उसे भी शीघ्र से शीघ्र नष्ट करना है।
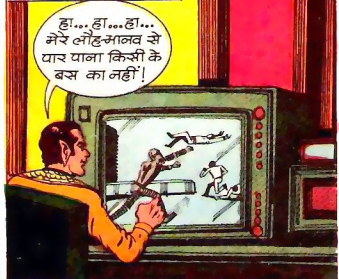
ठीक है चीफ अंकल! हम सब समझ गये। हम अपनी ओर से इस रहस्य को सुलझाने की पूरी कोशिश करेंगे। अब हमें आज्ञा दीजिये।
आओ, मेरी शुभ-कामनाएं तुम दोनों के साथ हैं।
उधर ड्रेगन के अड्डे पर-
पिक्-पिक्-पिक्-
स्वामी, शायद ट्रांसमीटर पर आपके लिये कोई संदेश है।
ओह! तुम एक मिनट रुको। मैं मैसेज रिसीवर कर लूं।
हैलो-हैलो, ड्रेगन स्पीकिंग!
मैं कामरेड वांग-चू बोल रहा हूं ड्रेगन! हमारे मिशन की क्या पोजीशन है?
पोजीशन बहुत अच्छी है मि. वांग-चू! प्रो. भार्गव व उनका आविष्कार मेरे कब्जे में है। आजकल में ही प्रोफेसर मुझे सौ रोबोट और देने वाले हैं! उसके बाद मैं तुम्हारी योजना अनुसार इस देश में खून की नदियां बहा दूंगा और जब यहां की जनता, पुलिस और सैनिक हमारे रोबोटों से निपटने में व्यस्त होगी...
...तब तुम्हारे सैनिक आक्रमण करके आसानी से इस देश पर कब्जा कर लेंगे।
वैरी गुड!
लेकिन तुम्हें ध्यान है ना कि हमें प्रोफेसर भार्गव और उनके रोबोट भी चाहिये।
ध्यान है! मिशन के पूरा होते ही प्रोफेसर और उसके सभी रोबोट भी तुम्हारे हवाले कर दिये जायेंगे।
गुड! ओवर एण्ड आल!

इधर सम्बन्ध-विच्छेद करने के पश्चात् जैसे ही ड्रेगन उठा, पीटर ने वहां प्रवेश किया।
बॉस, प्रोफेसर ने सारे रोबोट तैयार कर लिये हैं।
बहुत खूब!
आयरन मैन! आओ, हम तुम्हें तुम्हारे अन्य साथियों से मिलाते हैं।
जैसे ही ड्रेगन पीटर और आयरन मैन के साथ प्रोफेसर की प्रयोगशाला में प्रविष्ट हुआ–
नमस्कार आयरनमैन हम आपका स्वागत करते हैं।
वो मारा!
मुझे तुम लोगों से मिलकर बड़ी खुशी हो रही है दोस्तो!
हमें भी आयरन मैन! कहिये, हमारे लिये क्या आदेश है?
आदेश मैं अपने मास्टर से प्राप्त करता हूं। जरा रुको!
यस मास्टर! क्या आदेश है मेरे लिये?
जैसी आपकी आज्ञा मास्टर!
तुम दस-पन्द्रह साथियों को लेकर अपने काम पर रवाना हो जाओ। आज तुम्हें शहर के सबसे बड़े बाजार म्युनिसिपल मार्केट को लूटना है। कल से यह काम तुम्हारी देख-रेख में दस ग्रुप मिलकर विभिन्न नगरों में करेंगे।

ओह! तो यह इनसे लूटपाट करा रहा है। उफ! ईश्वर शायद मेरे इस गुनाह को कभी माफ नहीं करेगा।

सुनो साथियो, तुममें से दस मेरे साथ आओ।
ओ. के. आयरन मैन!
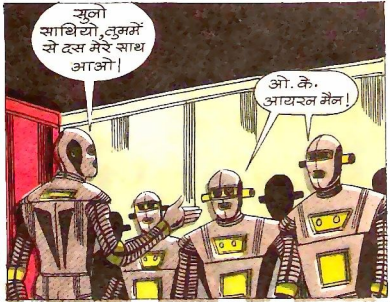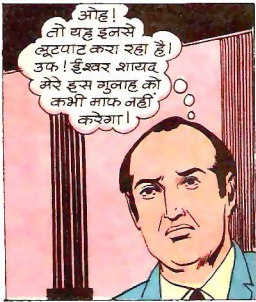
जब आयरन मैन अपने साथ रोबोटों को लेकर वहां से चला गया तो प्रोफेसर अन्य सभी रोबोटों को निर्जीव करने के पश्चात् ड्रेगन से बोला-
मैंने अपना काम पूरा कर दिया है ड्रेगन! अब तुम अपने वचनानुसार हमें आजाद कर दो।
हा-हा-हा- मैं इतना मूर्ख नहीं प्रोफेसर कि तुम्हें आजाद करके अपने हाथों ही अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार लूं। जब तक मेरा उद्देश्य पूरा नहीं हो जाता, तुम्हें यहीं रहना होगा।

पीटर, प्रोफेसर को आदरपूर्वक इनकी बेटी के पास ले जाओ। आज से दोनों एक ही स्थान पर कैद रहेंगे।
ओ. के. बॉस!
आइये प्रोफेसर!

नीच-कमीने, तुम जो कुछ कर रहे हो, उसका फल तुम्हें एक न-एक दिन भुगतना ही पड़ेगा। ईश्वर तुम्हें कभी माफ नहीं करेगा।
हा... हा... हा... अपनी दुनिया का मैं खुद ईश्वर हूं मूर्ख। फिर भला मुझे कौन सज़ा दे सकता है?
उसके बाद वह भी वहां से निकलकर अपने कंट्रोल रूम की ओर चल पड़ा।
उधर राम-रहीम सुबह से ही शहर की गश्त लगा रहे थे।
भइया, सड़कें नापते-नापते तो सुबह से शाम हो गई। लगता है, वह लोहे का शैतान आज नहीं आयेगा। चलो, घर लौट चलें।
बस, एक राउंड - म्युनिसिपल मार्केट का और लगा लें, फिर घर ही चलेंगे।
कहने के साथ ही राम ने मोटर साइकिल का रुख म्युनिसिपल मार्केट की ओर मोड़ दिया।
भइया, मुझे तो ऐसा लगता है कि उसे पता चल चुका है कि अब उसका केस हमारे पास आ चुका है और उसकी खैर नहीं। इसलिये वह अपने बिल में दुबक गया होगा।
दिल को तसल्ली देने के लिये ख्याल अच्छा है।
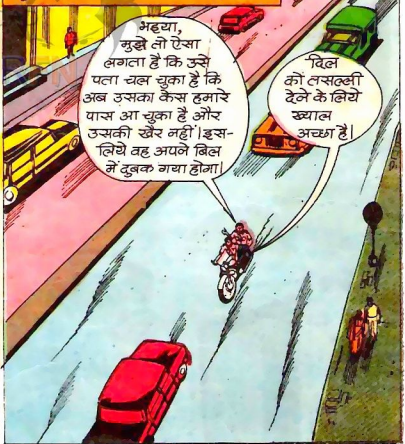
फिर अभी वे म्युनिसिपल मार्केट के निकट पहुंचे ही थे कि तभी–
भागो-भागो!
बचाओ!
अरे! इस तरह बदहवास होकर क्यों भाग रहे हैं ये? क्या हुआ है इन्हें?
जरूर कोई गड़बड़ मालूम देती है। जल्दी नीचे उतरो।
क्यों भाई, यह पागलपन का दौरा आप लोगों को कैसे पड़ गया? आप सब इस तरह मुंह उठाए कहां भागे चले जा रहे हैं?
खैरियत चाहते हो तो तुम लोग भी भाग लो। आज एक शैतान की जगह दस-दस शैतान लूटपाट करने आये हैं और अब तक बहुत से लोगों को मौत के घाट उतार चुके हैं।

रहीम, जल्दी बैठो। हम उन्हें रोकने और सम्भव हो सका तो पकड़ने की कोशिश करेंगे।
हां चलो, मैं भी उन लौहमानवों से दो-दो हाथ करना चाहता हूं।
उधर एक स्थान पर -
कड़-कड़ कड़।
आ... ई... ई...
भागो!
जब राम-रहीम मार्केट में दाखिल हुए तो तमाम रोबोट लूटपाट और खून-खराबा करने में जुटे हुए थे।
वे रहे। कम्बख्त सत्यानाश करने में लगे हुए हैं।
रिवाल्वर निकाल लो और मोटर साइकिल से कूदने के लिये तैयार रहना। मैं मोटर साइकिल को उनसे टकराऊंगा।
ठीक है।

राम ने मोटर साइकिल पूरी स्पीड के साथ एक रोबोट की ओर दौड़ा दी।
हाय मरा!
उफ!
संयोग से वह रोबोट आयरन मैन था।

जैसे ही उनकी मोटर साइकिल आयरन मैन के निकट पहुंची।
कूदो!

लेकिन आयरन मैन मानो उनके विचारों को पहले ही ताड़ चुका था। मोटर साइकिल जैसे ही उससे टकराने को हुई, उसने एक जबरदस्त ठोकर मारकर उसे किसी तिनके के समान जमीन पर पड़े राम-रहीम की ओर उछाल दिया।
अरे बापरे, बचो!
उफ!

दोनों ने अपने आपको बड़ी मुश्किल से मोटर साइकिल की चपेट में आने से बचाया। लेकिन उन्हें बचते देख आयरन मैन क्रोध से आग-बबूला हो उठा।
चालाक छोकरो, अब तुम मेरे हाथों नहीं बचोगे। मैं तुम्हें आटे की तरह पीस कर रख दूंगा।
अबे चुप बे मुर्गी के बच्चे! भला हम कोई गेहूं हैं, जो तू हमारा आटा बनायेगा।

आयरन मैन तुरन्त झुंझलाकर उन पर झपट पड़ा, लेकिन राम-रहीम इस बार पूरी तरह सतर्क थे। उन्होंने न केवल इधर-उधर हवा में छलांगें लगाकर अपने आपको बचाया, बल्कि एक साथ कई फायर भी उस पर झोंक मारे।
बेटे, पहले गोली तो खा, फिर पकड़ना हमें!
धांय-धांय
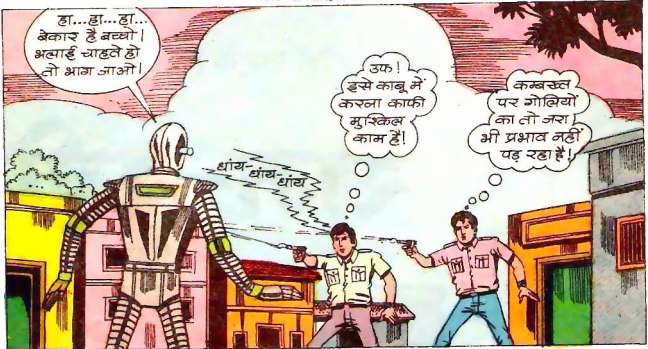
हा...हा...हा... बेकार है बच्चो! भलाई चाहते हो तो भाग जाओ।
उफ! इसे काबू में करना काफी मुश्किल काम है!
कम्बख्त पर गोलियों का तो जरा भी प्रभाव नहीं पड़ रहा है!
धांय-धांय-धांय
उधर ड्रेगन अपने कन्ट्रोलरूम में बैठा स्क्रीन पर वह सब नजारा देख रहा था। राम-रहीम को पहचानकर वह बुरी तरह चौंक उठा।
यदि इन दोनों शैतान छोकरों को जिन्दा पकड़कर वांग-चू के देश में भेजा जाए तो मुझे लाखों रुपये मिल सकते हैं। वांग-चू के देश को इन दोनों की सख्त जरूरत है।
इधर अचानक ही आयरन मैन ने हवा में उड़ान भरी।
हे भगवान! रहीम, भागो!
और राम-रहीम पूरी शक्ति से एक तरफ दौड़ पड़े।
हा-हा-हा- बचकर कहां जाओगे बच्चों!
अगले ही पल आयरन मैन ने रहीम पर झपट्टा मारा।
उफ! नहीं!
ही...ही...ही... पहले मैं तुम्हारा कचूमर निकालूंगा, फिर तुम्हारे साथी से निपटूंगा।

परन्तु जैसे ही उसने रहीम की गर्दन मरोड़नी चाही -
ठहरो आयरन मैन, इसे मारने की बजाय जिन्दा ही अड्डे पर ले आओ। यह और इसका साथी हमारे लिये बहुत काम के हैं।
ओह, ठीक है मास्टर!
वह संदेश ड्रेगन ने अपने कन्ट्रोलरूम से ही आयरन मैन के मस्तिष्क में पहुंचाया था।
रहीम की कनपटी की एक नस दबाकर उसने उसे बेहोश किया और राम को तलाशने लगा। तभी ड्रेगन का संदेश पुन: उसके मस्तिष्क में पहुंचा।
वह इस समय काफी दूर पहुंच चुका है आयरन मैन! उसे फिर देखेंगे। तुम रहीम और अपने साथियों को लेकर वापस लौट आओ।
ओ.के मास्टर!
फिर वह उड़ता हुआ अपने साथियों के पास पहुंच गया, जो जन शून्य हो गये बाजार में लूटपाट करने में लगे हुए थे।
बहुत हो चुका दोस्तो! अब लौट चलो।
चलो साथियो, वापस चलो!
और वे सब लूट के माल व रहीम के साथ वापस लौट पड़े।
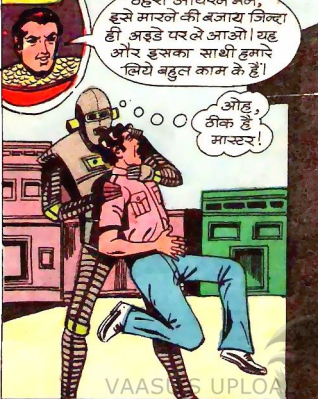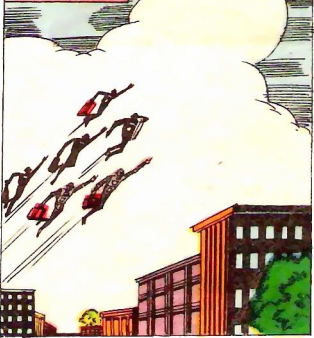
सूचना मिलने पर जब पुलिस बल वहां पहुंचा-
उफ! शैतान एक बार फिर पूरे बाजार को कबाड़खाना बना गये!
सिपाहियो, तुरन्त घायलों को मलबे से निकालो और हॉस्पिटल पहुंचाओ!
यस सर!
इधर राम, बिना यह देखे कि रहीम उसके पीछे आ भी रहा है अथवा नहीं, पूरी शक्ति से दौड़ा ही चला जा रहा था।
जितनी दूर निकल जाऊं, उतना ही अच्छा है। उस रोबोट के हाथ लगने का मतलब होगा एक भयानक मौत!

तभी अचानक उसे रहीम का ध्यान आया और वह तुरन्त पलट पड़ा।

अरे! रहीम कहां गया? कहीं वह उस लोहे के शैतान के हाथ तो नहीं लग गया?

ओह! नहीं। ऐसा नहीं हो सकता। मैं उसकी मौत बर्दाश्त नहीं कर पाऊंगा। रहीम sss!

रहीम की मौत की कल्पना करते ही राम का दिमाग बुरी तरह चकरा उठा।

आह! मेरी चेतना मेरा साथ छोड़ती जा रही है।

अगले ही पल वह बेहोश होकर सड़क के बीचोबीच लुढ़क गया।

...जाओ, ले जाओ इसे और कैदखाने में डाल दो। और हां, कल तुम्हें अपने साथियों के साथ जाकर इसके दूसरे साथी को भी उसके घर से जीवित उठाकर लाना है।
अवश्य मि. ड्रेगन!
नम्बर वन! लो, इसे संभालो...
...अब तुम लोग रहीम के साथ-साथ इसे और इसके तमाम साथियों को भी ले जाकर कैदखाने में डाल दो।
क्या???
आयरन मैन का आदेश मिलते ही दसों रोबोटों ने अपनी-अपनी एटामिक गन ड्रेगन तथा उसके साथियों पर तान दीं।
तुम्हारा दिमाग तो ठीक है ना आयरन मैन। मैं तुम्हारा स्वामी हूं। निर्माता हूं। क्या तुम मुझे ही कैद करोगे?
मजबूरी है मि. ड्रेगन! प्रोफेसर भार्गव ने मुझमें इतनी अधिक बुद्धि और शक्ति भर दी है कि अब मेरा मस्तिष्क तुम्हारी अधीनता स्वीकार करने से इंकार कर रहा है...
...मेरी असाधारण बुद्धि के आगे तुम एक गधे के समान हो। अत: मेरी बुद्धि मुझसे कह रही है कि तुम्हारा सारा ताम-झाम यानी तुम्हारा यह स्टेशन मैं संभाल लूं और तुम्हारे साधनों और अपनी शक्ति से पूरे विश्व पर कब्जा करके उस पर राज करूं।
ओ नो-तुम ऐसा नहीं कर सकते!

अवश्य कर सकता हूं मि. ड्रेगन! शीघ्र ही मैं प्रोफेसर भार्गव से मिल कर यहां एक ऐसा स्टेशन तैयार करूंगा, जिससे पूरे विश्व पर एक साथ आक्रमण कर उसे ध्वस्त कर सकूं! उसके बाद मैं एक नई सृष्टि का निर्माण करूंगा। ऐसी सृष्टि का जिस में कोई अपंग, बेरोजगार, मूर्ख और कमजोर नहीं होगा। सभी सबल, बुद्धिमान और स्वस्थ होंगे।

त... तो क्या तुम हमें भी मार डालोगे?
हां, लेकिन विश्व-सम्राट बनने के बाद। वैसे मैं केवल तुम्हारे शरीरों का ही नाश करूंगा, दिमागों का इस्तेमाल मैं कुछ परिवर्तन करने के बाद अपने निर्मित इन्सानों में करूंगा।

ओफ्फ! इसका दिमाग तो वास्तव में फिर गया मालूम पड़ता है। कम्बख्त, पूरी पृथ्वी पर शासन करने का ख्वाब देख रहा है। परन्तु स्थिति ऐसी भी तो नहीं कि इसका विरोध किया जा सके। मुकाबला करने पर ये हमें मौत के घाट भी उतार सकता है!

हाय! लगता है, अब जिन्दगी के दिन पूरे हो चले हैं!
हे ईश्वर, इन शैतानों के बादशाह की अक्ल ठिकाने लगा, वरना तेरी सृष्टि की खैर नहीं!

साथियो, ले जाओ इसे और यहां मौजूद इसके तमाम साथियों के साथ इसे कैदखाने में डाल दो।
जो आज्ञा आयरन मैन!

रोबोट उन सभी को लेकर वहां से चल पड़े। ड्रेगन आदि किसी ने भी उनका कोई विरोध करने की कोशिश नहीं की, क्योंकि वे अच्छी तरह जानते थे कि उन लौह-मानवों से मुकाबला कर उन्हें परास्त करना उनके बस की बात नहीं है।
हा... हा... हा...!
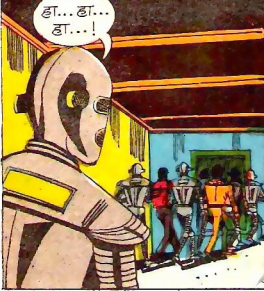
ड्रेगन, उसके साथियों व रोबोटों के जाने के बाद आयरन मैन ने वहां मौजूद अन्य निर्जीव रोबोटों की पीठ पर लगे बटनों को दबाकर सभी को जीवित कर दिया।
तुम सब ध्यान से सुनो। इस पूरे अड्डे की निगरानी अब तुम लोगों को करनी है। साथ ही प्रोफेसर भार्गव के साथ मिलकर न केवल तुम्हें एक नया स्टेशन ही यहां तैयार करना है, बल्कि अपने बहुत से लौह-मानव साथियों का भी निर्माण करना है!

हम समझ गये आयरन मैन!
शाबाश! तो जाओ, चारों तरफ फैलकर अपना-अपना काम सम्भाल लो। ध्यान रहे, यदि कोई कैदी मनुष्य कोई गड़बड़ करने की कोशिश करे तो उसे मौत के घाट उतार देना।
तुरन्त सभी रोबोट प्रयोगशाला से बाहर निकल गये।

उन सबके जाने के बाद—
अब मुझे चलकर प्रोफेसर और उनकी बेटी से बातचीत कर लेनी चाहिये। ताकि प्रोग्राम में कोई ढील न होने पाये!
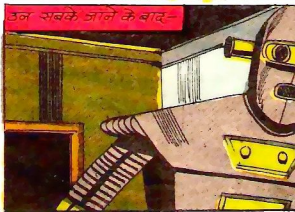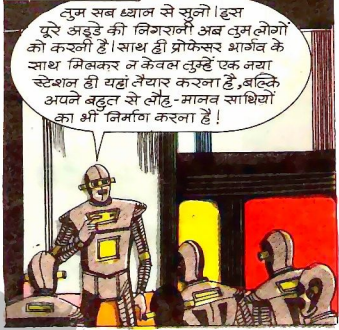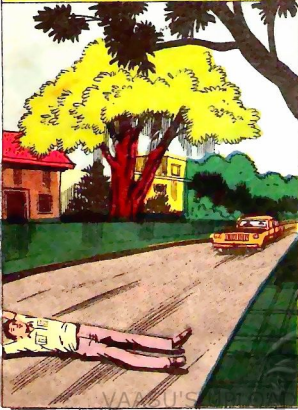
उधर राम अभी तक बेहोश पड़ा था।
बेहोश पड़े राम पर दृष्टि पड़ते ही एक कार के ड्राइवर ने तुरन्त ब्रेक लगा दिये।
ओह! शायद किसी दुर्घटना का शिकार हुआ मालूम पड़ता है!
क्या बात है ड्राइवर? गाड़ी क्यों रोक दी?
साहब! सड़क पर कोई घायल पड़ा है!
ओह! ठहरो, मैं देखता हूं!
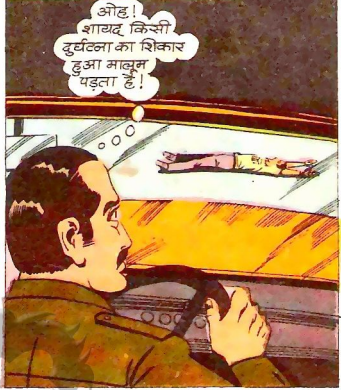
अगले ही पल -
अरे! यह तो राम है! क्या हुआ इसे?
ड्राइवर! जल्दी इधर आओ और इसे उठाने में मेरी मदद करो।
आया साहब!
शीघ्र ही -
ड्राइवर, सीधे कोठी चलो!
बहुत अच्छा साहब!
कोठी में पहुंचने पर -
उफ! कुछ समझ में नहीं आ रहा। क्या घटना घट सकती है राम के साथ और यह अकेला ही सड़क पर क्यों पड़ा था? रहीम क्यों नहीं था इसके साथ?
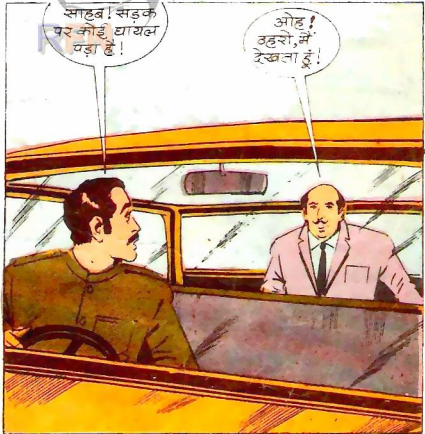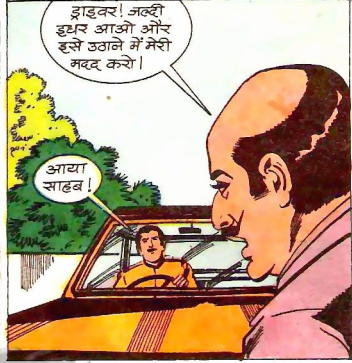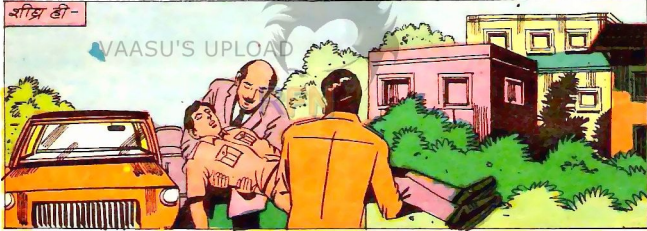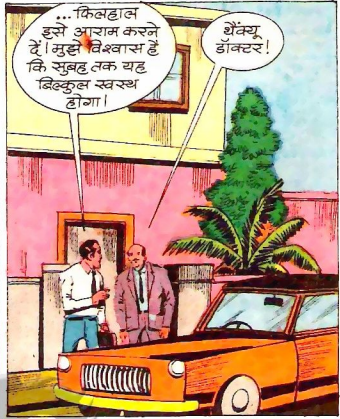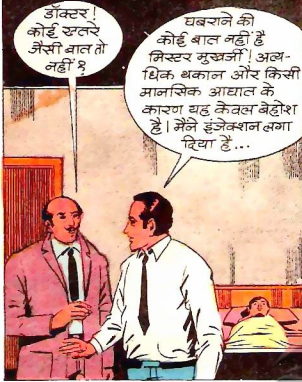
डॉक्टर के जाने के बाद चीफ मुखर्जी ने रहीम को फोन किया, लेकिन जब वह घर पर नहीं मिला तो वे किन्हीं गहन विचारों में खो गये। सहसा एक विचार के मन में आते ही वे चौंक उठे!

राम मुझे म्युनिसिपल मार्केट से कुछ ही दूर बेहोश पड़ा मिला था। कहीं ऐसा तो नहीं कि इसकी बेहोशी का कारण वे ही लोहे के शैतान रहे हों, जिन्होंने कि म्युनिसिपल मार्केट को लूटा है। लेकिन यह रहीम अचानक कहां गायब हो गया? खैर, अब राम के होश में आने पर ही सारी बात मालूम हो पाएगी!

और फिर वे राम के होश में आने का इन्तजार करने लगे।

उधर जब आयरन मैन प्रोफेसर और उसकी बेटी से मिलने उनके कैदखाने पहुंचा-
आयरन मैन तुम!
हां प्रोफेसर, मैं! तुम्हारा धन्यवाद अदा करने आया हूं, क्योंकि तुम्हारी दी हुई बुद्धि और शक्ति से मैंने मूर्ख ड्रेगन का पासा पलट दिया है और इस समय वह अपने साथियों सहित मेरी कैद में है...
???
...और अब वह दिन दूर नहीं प्रोफेसर, जब मैं तुम्हारी पूरी पृथ्वी का विनाश कर एक नई सृष्टि का निर्माण करूंगा, जिसका शासक और खुदा केवल मैं होऊंगा! और तुम मेरे विशेष सेवक होगे!
और जब उसने अपनी पूरी योजना उन्हें बताई तो प्रोफेसर और उनकी बेटी दोनों का रोम-रोम कांप उठा!
उफ! जरूर मेरे फार्मूले में कोई कमी रह गई थी, जिसके कारण इसका दिमाग विकृत हो उठा है और यह शैतान पूरी मानव-जाति का विनाश कर देने पर तुल गया है! यदि यह ऐसा कर बैठा तो... नहीं-नहीं, इसे किसी भी तरह रोकना ही होगा...
...और इसे रोकने का एकमात्र उपाय यही है कि किसी तरह इसे बातों में लगाकर इसके पीछे लगे निर्जीव करने वाले बटन को दबा दिया जाए!
क्या सोचने लगे प्रोफेसर! जवाब दो! तुम मेरे लिए काम करने के लिए तैयार हो या नहीं!
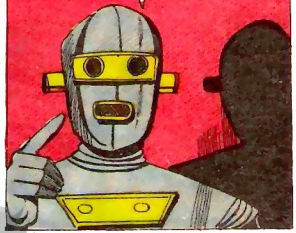
तुम मुझसे क्या काम लेना चाहते हो?

बस इतना कि तुम मेरे रोबोट साथियों के साथ मिलकर लौह-मानवों की एक बड़ी सेना और एक ऐसे स्टेशन का निर्माण करो, जहां से बैठे-बैठे ही मैं पूरे विश्व को नेस्तनाबूद कर सकूं!

मैं तैयार हूं आयरन मैन! हाथ मिलाओ!

नहीं डैडी! आप ऐसा हरगिज मत करना! अगर आपने इस शैतान का साथ दिया तो इंसानियत आप पर थूकेगी!

सुनो प्रोफेसर, मुझे धोखा देना इतना आसान नहीं। अब तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम इसी समय प्रयोगशाला में जाकर अपने काम में जुट जाओ। हम तुम्हारी बेटी से प्यार की दो बातें करके अभी आते हैं।
क्या ?
ओ... नो!
हे ईश्वर! यह तो सचमुच शैतान बन बैठा है। मैंने तो इसे इंसान की सेवा के लिये बनाया था, परन्तु यह तो... जरूर यह विकार इस में ड्रेगन की दुष्ट बुद्धि को ग्रहण करने के बाद आया होगा!
घबराओ नहीं डार्लिंग, हमारे पास आओ! हम तुम्हें अपने दिल की मलिका बनायेंगे।
नहीं, डैडी बचाओ!

रुक जाओ आयरन मैन। अगर तुमने मेरी बेटी को हाथ भी लगाया तो मैं मरते मर जाऊंगा, किन्तु तुम्हारे लिए कोई काम नहीं करूंगा।
प्रोफेसर की चेतावनी सुन आयरन मैन को एक झटका-सा लगा।
नाराज मत हो प्रोफेसर! हम तुम्हारी बेटी पर मुग्ध हैं और उसे अपनी पत्नी बनाना चाहते हैं।
यदि ऐसी बात है तो पहले विश्व को फतह कर लो। उसके बाद मैं अपनी बेटी का हाथ स्वयं तुम्हारे हाथ में दे दूंगा।
हुम्म! अगर तुम्हारी यही शर्त है तो मुझे मंजूर है, लेकिन तुम मुझे जल्द से जल्द रोबोट और एटामिक स्टेशन तैयार करके दोगे। अब तुम दोनों आजाद हो और अभी से अपने काम में जुट जाओ...

आयरन मैन के जाते ही कामिनी अपने पिता के सीने से लगकर सिसक उठी।

यह आपने उस शैतान को कैसा वचन दे दिया डैडी?

मजबूरी थी बेटी! तुम्हें उस शैतान से बचाने के लिये फिलहाल मेरे पास दूसरा कोई रास्ता नहीं था। लेकिन धैर्य रखो, ईश्वर के घर देर है अंधेर नहीं। वह जरूर कोई रास्ता निकालेगा और उस लोहे के शैतान का अंत होगा।

- क्या प्रोफेसर आयरन मैन को निर्जीव कर सके?
- क्या आयरन मैन पूरी दुनिया को अपनी मुट्ठी में कर सका?
- राम-रहीम का क्या हुआ? क्या दोनों एक-दूसरे से फिर मिल सके?
- डेग्रन और उसके साथियों का क्या हुआ? क्या वे आयरन मैन की कैद से मुक्त हो सके?
- इन सब प्रश्नों के उत्तर जानने के लिये पढ़ें :-

मुद्रक : अशोका आफसेट वर्कस, दिल्ली